प्रो० अभिराजराजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत बालसाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

पूनम सिंह

शोध निर्देशिका

डॉ० निशीथ गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा – 282005

2024

प्राक्कथन

संस्कृत का आधुनिक युग काव्य की विविध विधाओं के सृजन का युग रहा है और आज भी नित नवीन काव्यों का सृजन हो रहा है। संस्कृत साहित्य अत्यंत विस्तृत एवं समृद्ध कलेवर को समेटे हुए है। अगर हम संस्कृत साहित्य के इतिहास की ओर दृष्टि करें, तो इसे मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया गया है।

(1) वैदिक साहित्य (2) लौकिक साहित्य

वैदिक साहित्य के अंतर्गत चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) ब्राह्मणग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद्, स्मृतिग्रंथ, पुराण आदि का समावेशन हुआ है। इसी भांति लौकिक साहित्य का क्षेत्र भी अत्यंत विस्तृत एवं समृद्ध है। इसके अंतर्गत गद्यकाव्य, पद्यकाव्य, चम्पूकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य आदि अनेक विधाएँ आती हैं। आधुनिक युग में अनेक नवीन विधाओं का संस्कृत वाङ्मय में सृजन हो रहा है। यथा- उपन्यास, एकांकी, स्तोत्रकाव्य, गलज्जलिका, प्रहेलिका इत्यादि साथ ही अनेक कहानियाँ, लघुकथाएँ, व्यंग्य एवं आलोचनाएँ भी लिखी जा रही हैं। आधुनिक समय में विविध विषयों को लेकर साहित्यिक रचनाएँ की जा रही हैं जैसे- राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, यात्रासाहित्य इत्यादि। इसी क्रम में बालसाहित्य की रचनाएं भी महत्वपूर्ण हैं।

बाल साहित्य से तात्पर्य बालकों के लिए या बालकों के द्वारा लिखे जाने वाले साहित्य से है। अब प्रश्न उठता है की बालक कौन है? तो बाल मनोविज्ञान के अनुसार सामान्यतः 6 से 12 वर्ष की आयु के व्यक्ति को बालक कहा जाता है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक विविध शारीरिक एवं मानसिक अवस्थाओं से गुजरता है। जिसमें से बालक की अवस्था को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। बालक मिट्टी के कच्चे घड़े की भाँति होता है, जिसे किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। उसे अच्छे से अच्छा रूप प्रदान किया जा सकता है। बाल्यावस्था को निर्माणकाल भी कहते हैं। बालकों के सर्वांगीण बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास के लिए, उन्हें संस्कारित करने के लिए तथा सत्य- असत्य, उचित-अनुचित एवं ज्ञान अज्ञान से परिचित कराने के लिए बाल साहित्य की रचना की गई।

संस्कृत साहित्य में बाल साहित्य के सृजन के बीज वैदिक काल से ही देखने को मिलते हैं। वैदिक काल में उपमन्यु,

श्वेतकेतु, नचिकेता, प्रह्लाद, ध्रुव, अष्टावक्र, ऋष्यभद्र आदि बालचरितों का वर्णन देखने को मिलता है, जो त्याग, गुरुभक्ति, प्रेम, सम्मान, समर्पण, सत्य आदि गुणों के माध्यम से संपूर्ण जगत को संस्कारित करते हैं। **तैत्तिरीयोपनिषद्** के **शिक्षावल्ली** के **11वें अनुवाक** में **मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव** जैसे लघु मंत्रों के माध्यम से बड़ों के प्रति आदर एवं श्रद्धा भाव की शिक्षा दी गई है।

रामायण-महाभारत युग में लव, कुश, एकलव्य, अश्वत्थामा, कृष्ण आदि बाल चरित महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार अनेक नीति कथाओं के माध्यम से बालकों एवं पशुओं को पात्रों के रूप में लेकर नैतिक मूल्यों को आत्मसात् करने की बात कही गई है।

तृतीय शताब्दी में प्राप्त भरहूत स्तूप पर अनेक पशु पक्षियों की कथाएँ प्राप्त हुईं। पंडित विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र नामक नीतिग्रंथ की रचना की जिसके माध्यम से दक्षिण भारत के महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरकीर्ति के तीन पुत्रों को महामूर्ख से महाज्ञानी बना दिया। इस ग्रंथ के साथ ही बालकों के लिए साहित्य सृजन का क्रम निरंतर चल रहा है। हितोपदेश, बृहत्कथा आदि अनेक ग्रंथ लिखे गए। आधुनिक समय में पंडित वासुदेव द्विवेदी शास्त्री जी, पंडित दिगंबर महापात्र, वीरभद्र मिश्र, बाबूराम अवस्थी जी, इच्छाराम द्विवेदी, डॉ० संपदानंद मिश्र, केशव चंद्रसेन आदि साहित्यकारों का बालसाहित्य रचना में प्रभूतपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक रचनाकार बालकों के लिए कथा, काव्य, नाटक, कविताओं, एकांकीयों प्रहेलिकाओं इत्यादि का सृजन कर बालकों का मनोरंजन कर उनकी कल्पनाशीलता एवं नैतिक मूल्यों का विकास कर रहे हैं। वर्तमान में जहां एक ओर पारंपरिक मूल्यों का क्षरण दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर नवीन जीवन मूल्यों का सृजन भी दिखाई देता है। समाज के इस परिवर्तन को एक सजग प्रहरी की भांति आधुनिक संस्कृत वाङ्मय के रचनाकार अपनी लेखनी के माध्यम से रेखांकित कर रहे हैं। वे विविध प्राचीन एवं पौराणिक प्रसंगों को लेकर नवीन कलेवर में डालकर प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

आधुनिक संस्कृत साहित्य के एक सुदृढ़ स्तंभ के रूप में **प्रो०अभिराज राजेंद्र मिश्र** जी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। इन्होंने एक विस्तृत संस्कृत साहित्य की रचना की है तथा आज भी इनकी लेखनी अविराम गति से चल रही है। अभिराज जी की अद्भुत लेखन शैली से प्रभावित होकर ही मेरी रुचि इनके साहित्य के अध्ययन के प्रति उन्मुख हुई। नैतिक मूल्यों

के क्षरण होते वर्तमान में बालकों को उचित दिशानिर्देश देने और उन्हें संस्कारित करने के लिए पौराणिक एवं नवीन बालचरितों को लेकर प्रो० मिश्र ने बालसाहित्य की रचना की है। उन्होंने बालकों के लिए विविध पद्य काव्यों, कथा और नाट्यों (एकांकी) की रचना की इसलिए मेरे द्वारा उनके बाल साहित्य को गहनता से अध्ययन करने एवं विचार विमर्श करने की जिज्ञासा हुई इसी कारण मैंने अपना शोध का प्रबंधन विषय- **"प्रो० अभिराजराजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत बाल साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन"** को रखा है।

यदि काव्यशास्त्रीय दृष्टि से काव्य, कथा और नाट्य (एकांकी) को देखें तो विविध विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार परिभाषित किया है।

काव्य (पद्य)

मनुष्य के हृदय या चित्त से किसी रस, मनोवेग अर्थात् आनंद की अभिव्यक्ति को ही काव्य कहते हैं। सामान्यतः कवि का कर्म ही काव्य कहा गया है-

कवे: कर्मः इति काव्यम्।

आचार्य मम्मट के अनुसार-

"तददोषौशब्दाथौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि।"

(काव्यप्रकाश प्रथम उल्लास पृष्ठ संख्या 18)

अर्थात ऐसे शब्द और अर्थ काव्य हैं जो दोषों से रहित हैं, गुणों से युक्त है, कहीं कहीं अलंकार रहित भी है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-

"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"

(सा० द०, प्र० परि० पृष्ठ सं० 23)

संस्कृत के साहित्य शास्त्रियों ने अलौकिक ब्रह्मानंद सहोदर काव्य को दो भागों में विभक्त किया है-

1) दृश्यकाव्य ,

2) श्रव्यकाव्य।

दृश्य श्रव्यत्व भेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्।।

दृश्यं तत्राभिनेयम् तद्रूपात्तुरूपकम्।।2

(साहित्य दर्पण पृष्ठ सं. 371)

प्रो० अभिराजराजेन्द्र मिश्र के अनुसार-

"दृश्यश्रव्यप्रकाराभ्यामादौ काव्यं द्विधामतम्।।19"

(अभिराजयशोभूषणम् पृष्ठ -198)

श्रव्यकाव्य के पुनः तीन भेद हैं-

पद्यगद्यमयं श्रव्यं मिश्रश्चेति त्रिधास्थितम्।।51।।

अर्थात् श्रव्य काव्य के पद्य, गद्य और मिश्र काव्य पुनः तीन भेद हुए हैं। पद्य काव्य के अंतर्गत छंदोबद्ध, मुक्तक काव्य, गीत, गज़ल, कविताएं इत्यादि का समावेशन माना जाता है।

कथा

कथा की गणना गद्य काव्य के अंतर्गत की जाती है। मनुष्य प्राचीन काल से ही अपनी दादी, नानी तथा पूर्वजों से विविध प्रकार की कथाएं सुनते आ रहा है, अर्थात् कथा कहने का क्रम बहुत पुराना है। **कथा** शब्द कथ धातु से अङ् प्रत्यय होकर स्त्रीलिंग में **टाप्** प्रत्यय करने से बना है।

साहित्य दर्पण के अनुसार-

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्,
क्वचिद् भवेदाया क्वचित् वक्त्रापवक्त्रके।
आदौ पद्ये नमस्कार खलादे वृत्तकीर्तनम्।।

(साहित्यदर्पण प्रथम परिच्छेद पृष्ठ-332-334)

अर्थात कथा में सरस कथावस्तु होती है, गद्य में निर्मित होती है, कथा के आदि में दुष्टों व देवताओं का पद्य में नमस्कार होता है। कथा के मुख्य दो भेद हैं **- लघु कथा** और **दीर्घ कथा**।

नाट्य

नाट्य एक दृश्य काव्य विधा है। आचार्य भरत मुनि ने नाट्य को लेकर नाट्यशास्त्र की रचना की। नाट्य के बीज वैदिक

काल से ही हमें देखने को मिलते हैं। इसे **पंचमवेद** भी कहा जाता है। दृश्य काव्य को दो भागों में विभक्त करते हैं**- रूपक** और **उपरूपक**। आधुनिक युग में एकांकी, नाटिका, नुक्कड़ नाटक आदि अन्य नाट्य विधाएं भी सामने आई हैं। संस्कृत साहित्य में 10 रूपकों और 18 उपरूपकों में 16 भेद एक अंक वाले हैं। परंतु एकांकी को एक स्वतंत्र विधा माना गया है। आधुनिक एकांकीकार प्रोफेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र जी अपने काव्यशास्त्रीय ग्रंथ अभिराजयशोभूषणम् में एकांकी का लक्षण देते हैं-

हिन्दीप्रभृतिभाषासु भारतीयासु साम्प्रतम्।
लघुनाट्यं यदेकाङ्कि सर्वाऽभीष्टं महीयते।१।।
देववाच्यपि तन्नूनं तद्वदेव प्रतिष्ठितम्।
नियन्त्रितं न तज्ज्ञेयमुपरूपकलक्षणैः।।२।।
नायकोऽत्र भवेद्भूपः पण्डितः पामरोऽथवा।
दिव्योऽदिव्योऽथवाऽन्योऽपि शिक्षकोभिक्षुकोयतिः।।३।।
योऽपि कश्चिद् भवेन्नेता पुरुषो महिलाऽथवा।
यादृशश्चापि वृत्तं स्यान्नाट्यकृत्प्रतिभाश्रितम्।।४।।
एकाहचरितश्चैव लघुनाट्ये प्रयोजयेत्।
संवादबहुला भाषा व्यङ्ग्यगर्भाऽत्र सम्मता।।५।।
रसः कोऽपि भवेदङ्गी नाट्यवृत्तानुगुण्यतः।
लक्ष्यमेकं परं तस्य भवेद्रङ्गप्रसादनम्।।६।।
नाट्यशिल्पादिसम्बद्धं वैलक्षण्यं नवं नवम्।
एकाङ्केऽस्मिन् प्रयोक्तव्यं नाट्यकर्त्रा यथामति।।७।।18

(अभिराजयशोभूषणम् पृष्ठ संख्या - 203-4)

हिंदी आदि भारतीय भाषाओं में इस समय एकांकी नामक जो सबको प्रिय लगने वाला लघु नाट्य प्रतिष्ठित है वही, निश्चित रूप से देववाणी संस्कृत में भी उसी प्रकार प्रतिष्ठित हो चुका है परंतु उसे किसी संस्कृत उपरूपक के लक्षण से (सर्वात्मना) नियंत्रित नहीं मानना चाहिए। एकांकी में राजा, पंडित अथवा पामर (ग्राम्यजन) दिव्य अथवा आदिव्य-कोटिक कोई भी पात्र अन्यान्य शिक्षक, भिक्षुक या संन्यासी पुरुष अथवा महिला जो कोई भी हो ,नेता हो सकता है। एकांकी का इतिवृत्त भी जिस किसी भी प्रकार का हो सकता है, परंतु हाँ उसे नाट्यकार की प्रतिभा से समन्वित होना चाहिए। इस लघुनाट्य में एक ही दिन में घटी हुई घटना का वर्णन किया जाना चाहिए। भाषा संवाद बहुल होनी चाहिए। व्यंग्यगर्भा भाषा होनी चाहिए। एकांकी के इतिवृत्त के ही अनुकूल कोई भी रस अंगीरस हो सकता है। परंतु उस रस का एकमात्र लक्ष्य रंग का प्रसादन होना चाहिए। नाट्यकार को अपने बुद्धि वैभव के अनुसार इस एकांकी में नाट्यशिल्पादि से संबंध नई-नई विलक्षणता प्रयुक्त करनी चाहिए।

(अभिराजयशोभूषणम् पृष्ठ संख्या -203-4)

शोधकार्य का उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य के प्रति जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट कर संस्कृत भाषा में रुचि उत्पन्न करना।
- शोधकार्य के द्वारा समाज को आधुनिक बाल-साहित्य का ज्ञान प्रदान करना।
- वैदिक, पौराणिक, रामायण महाभारतयुगीन प्रसिद्ध बालचरितों के द्वारा वर्तमान बालचरितों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का विकास करना।
- बालसाहित्यों के द्वारा बालकों की सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को उत्पन्न करना।
- शोधकार्य के द्वारा समाज में बालसाहित्य के प्रति रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- अभिराज जी द्वारा रचित बालसाहित्य की वर्तमान में उपादेयता बताना।
- अध्येय बालसाहित्यकार के जीवन पर दृष्टि करना।
- समाज को भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों से परिचित करना।

शोध दृष्टि

- शोध में प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में प्रसिद्ध बालचरितों का वर्णन करना।
- आधुनिक संस्कृत के त्रिवेणी कवि के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का ज्ञान प्राप्त करना।
- काव्यशास्त्रीय दृष्टि से बालसाहित्य की व्याख्या करना।
- शोध प्रबन्ध कार्य की उपादेयता का वर्णन करना।
- बालसाहित्य का सामाजिक दृष्टि से विवेचन करना।
- अध्येय कृतियों के द्वारा सांस्कृतिक दृष्टि का निरूपण करना।
- शोध कार्य की सहायक ग्रन्थ सूची का विवरण करना।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

शोध प्रबन्ध का विषय चयन करने से पूर्व मेरे द्वारा ग्रन्थालयों, शोधगंगोत्री, शोधगंगा, इन्टरनेट आदि का गहन अन्वेषण किया गया, किन्तु प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी के बालसाहित्य को लेकर मेरे संज्ञान में कोई कार्य नहीं हुआ है। सम्बन्धित शोध इस प्रकार है -

1) आधुनिक बालसाहित्य : एक अध्ययन (लघु कथाओं के सन्दर्भ में)- 2008 प्रो० मीरा शर्मा के निर्देशन में - कु० निशा गौतम द्वारा (डी.ई.आई.)।

2) आधुनिक संस्कृत बालसाहित्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन- 2021 डॉ० पूर्णचंद्र उपाध्याय के निर्देशन में- हेमराज सैनी द्वारा (कोटा विश्वविद्यालय, कोटा)।

3) कविवर अभिराज राजेन्द्र के कथा-साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन (2009 ई. तक के ग्रन्थित रचनाओं के सन्दर्भ में)- 2006 डॉ० साधना कंसल के निर्देशन में- श्रीमती अशोक कंवर शेखावत द्वारा (राजकीय महाविद्यालय, झालावाड़)।

4) कविवराभिराजराजेन्द्रमिश्रकृतनवगीतात्मकसंस्कृतकृतीनां समीक्षात्मक अध्ययन (२०१२ तमख्रिस्ताब्दं यावद्रचितग्रन्थानां सन्दर्भे) डॉ० पूर्णचन्द्र उपाध्याय के निर्देशन में- समय सिंह् मीना द्वारा (कोटा विश्वविद्यालय, कोटा)।

5) विष्णुशर्माकृत पञ्चतंत्र एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत- अभिनवपंचतन्त्रम् का तुलनात्मक अध्ययन- जुलाई 2019 पूनम लखनपाल के निर्देशन में- विनीता द्वारा (चौधरी चरनसिंह यूनिवर्सिटी)

6) अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत कथा-साहित्य एक समीक्षात्मक अध्ययन- 2019 वी.के.अलंकार के निर्देशन में- चमनलाल के द्वारा (पंजाब यूनिवर्सिटी)।

शोध प्रविधि

अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मेरे द्वारा व्याख्यात्मक, विवेचनात्मक, आगमन, विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। जिसमें अध्येय बालसाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन किया जाएगा।

शोध से पूर्व अध्ययन

प्रस्तुत शोध विषय का चयन करने से पूर्व मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालयों, शोधगंगा, शोधगंगोत्री, ग्रन्थालयों का अन्वेषण किया गया तथा कई विद्वतजनों से परामर्श लिया गया। किन्तु मेरे द्वारा चयनित विषय **"प्रो० अभिराजराजेन्द्र**

मिश्र प्रणीत संस्कृत बालसाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" पर मेरे संज्ञान में कोई कार्य नहीं हुआ है। प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी से दूरभाषयन्त्र के माध्यम से मुझे ज्ञात हुआ कि उनके इस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अत: मैं, विद्वत्वर्ग से इस विषय पर शोधकार्य करने की अनुमति चाहती हूं। साथ ही आपके द्वारा मेरा मार्ग प्रशस्त किया जाए, मैं, सदैव आपकी आभारी रहूंगी।

प्रोफेसर अभिराज जी का परिचय

प्रोफेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र जी का जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल जनपद जौनपुर में सई नदी के तटवर्ती ग्राम द्रोणिपुर में 2 जनवरी 1943 ई० को एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता दुर्गा प्रसाद मिश्र तथा माता महियसी अभिराजी देवी थी । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.ए. डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की। 1966 ईस्वी में वहीं अध्यापन कार्य प्रारंभ किया और 1991 ई० तक कार्यरत रहे। उन्होंने 1350 से भी अधिक रचनाओं का सृजन किया है।

प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र का बालसाहित्य

प्रोफेसर अभिराज जी ने निम्नलिखित बालसाहित्यों की रचना की है -

काव्य- वाग्वधूटी, मृद्विका, श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी, कौमारम्, अभिराजगीता।

वाग्वधूटी- यह प्रोफेसर मिश्र द्वारा रचित 54 नवगीतों का काव्य संग्रह है। जिसमें सरस, मधुर एवं गेयात्मक छंद मुक्त गीतिकाएँ हैं तथा उत्तर प्रदेश के लोकगीत समाहित हैं। बालकों में राष्ट्रभक्ति उत्पन्न करने वाले राष्ट्रिय गीत हैं। प्रथम संस्करण अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा सन् 1987 ई. में प्रकाशित हुआ।

मृद्विका- दूसरा नवगीत संग्रह है। इसमें 53 नवगीत हैं। यह 6 भागों में विभक्त है- नमस्या, रूपश्री:, ऋतुश्री:, जिजीविषा, राष्ट्रीश्री: तथा प्रकीर्णम्। यह 1985 में वैजयंत प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई।

श्रुतिम्भरा- तृतीय नवगीत संग्रह है। इसमें 1984 से 1989 के मध्य रचे गए प्रोफेसर मिश्र के कुल 37 गीत हैं। पांच भागों में विभक्त है। 1989 में प्रथम संस्करण तथा 2004 में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। संस्कृत के प्रति विशेष अनुराग दिखाया गया है-

संस्कृतम् भवतु मम राष्ट्रम्।
नवगौरवम् दिशतु मम राष्ट्रम्।।

(श्रुतिम्भरा,03)

मधुपर्णी- यह 1989 से 2000 ई के मध्यवर्ती 11 वर्षों में रचित नवगीतों गज़लों और छंद मुक्त कविताओं का संकलन है। जिसमें प्रथम खंड **गलज्जलिका** में 22 गज़लें हैं। द्वितीय खंड **गीतय:** में 28 नवगीत है। तृतीय खंड **मुक्तछन्दांसि** शीर्षक में 18 छंद मुक्त कविताएं हैं। वैजयंत प्रकाशन सन् 2000 ईस्वी में इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इसकी भाषा अत्यंत सरल है। **'उपालम्भूभो रोहसेनस्य'** कविता में बालक रोहसेन के मनोभावों को दर्शाया गया है।

कौमारम्- इसमें शिशुजनोचित 52 गीतों का संग्रह है। यह गीत बालकों की बढ़ती अवस्था के साथ उत्तरोत्तर उनकी चिंतन शक्ति, कल्पनाओं तथा परिचय चक्र के अनुपात में लिखे गए हैं। यह रचना नयनाभिराम चित्र-वीथी के साथ यह ग्रंथ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 2009 ईस्वी में प्रकाशित है।

अभिराजगीता- इसमें मानव जीवन के विविध पक्षों का वर्णन किया गया है। यह 10 भागों में विभक्त रचना है। 2011 में श्री भद्रङ्करोदय शिक्षण ट्रस्ट, गोधरा द्वारा प्रकाशित हुई। शिशुभावनागीतम् शीर्षक में 18 बालोपयोगी गीतों का संग्रह है।

कथा ग्रंथ

अभिनवपञ्चतन्त्रम्- अभिनवपञ्चतन्त्रम् कथा में वक्ता एवं श्रोता तो पुराने हैं किंतु 16 कथाएं नवीन हैं। यह पांच भागों में विभक्त है। वैजयन्त प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है यह बालोपयोगी कथा संग्रह है। कान्तारकथा इसमें मुद्गल नामक ब्राह्मण के पुत्र मौद्गिल का जंगल के परिवेश में जीवन व्यतीत करने तथा अनेक नीति पूर्ण कथाओं का वर्णन है।

इक्षुगन्धा- कथानिका संग्रह इसमें जिजीविषा सुखशयितप्रच्छिका, अनामिका, एकहायनी, शतपर्विका, भग्नपञ्जरः, ताम्बूलकरङ्कवाहिनी, इक्षुन्धा शीर्षक में मर्मस्पर्शी कथानिकाओं का संग्रह है। 1988 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित है।

उत्तरकान्तारकथा- यह कान्तारकथा का अगला भाग है इसमें भी मुद्गिल तथा जंगल के परिवेश का वर्णन है। यह जंगली

पशुओं पर मानवीय अत्याचारों के विरुद्ध हो रहे उनके सफल आंदोलन की गाथा है।

नाट्य एकांकी संग्रह

नाट्यनवग्रहम्- बालोपयोगी 9 एकांकियों का संग्रह है। जिसका कथानक पुराण, उपनिषद् रामायण, महाभारत की कथाओं पर आधारित है। वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित है।

नाट्यपंचामृतम्- इसमें पांच एकांकी संग्रह हैं। दो पौराणिक दो ऐतिहासिक तथा एक सामाजिक विषय से संबंधित है। यह भी बालोपयोगी ग्रंथ है।

प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत बालसाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय- प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में बालचरित का वर्णन।

अ) वैदिक युग- शुन:शेप, उपमन्यु, श्वेत केतु, सत्यकामजाबाल, अहिदास, ऐतरेय आदि।

ब) पौराणिक युग- अष्टावक्र, प्रहलाद, ध्रुव, पराशर, कौत्स, ऋष्यभद्र आदि।

स) रामायण-महाभारत युग- लव-कुश, अभिमन्यु, अश्वत्थामा, कृष्ण-बलराम आदि।

द्वितीय अध्याय- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विवेचन।

अ) कवि का व्यक्तित्व

ब) कवि का कर्त्तृत्व (संक्षिप्त परिचय)।

स) शैक्षिक योग्यता का मूल्यांकन।

ब) पद- सम्मान- पुरस्कार।

तृतीय अध्याय- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी का संस्कृत बालसाहित्य।

क) काव्य - वाग्वधूटी, मृद्विका, श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी, कौमारम्, अभिराजगीता।

ब) कथा- अभिनवपञ्चतन्त्रम् , कान्तारकथा, इक्षुगन्धा, उत्तरकान्तारकथा।

ग) नाट्य- नाट्यनवग्रहम्, नाट्यपञ्चामृतम् (एकांकी संग्रह)

चतुर्थ अध्याय- प्रो० मिश्र प्रणीत बालसाहित्य की काव्यशास्त्रीय समीक्षा।

अ) वस्तु, नेता (पात्र) तथा रस की दृष्टि से कृतियों की समीक्षा।

ब) भाषा सौन्दर्य एवं नूतन शब्दों का निर्माण।

स) शैली सौन्दर्य तथा कथा की प्रासंगिकता।

द) छन्द, अलंकार विवेचन।

पञ्चम अध्याय- बालसाहित्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा।

अ) रचनाओं में प्रतिबिम्बित सामाजिक मूल्य।

ब) रचनाओं में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति।

स) विश्वबन्धुत्व एवं सर्वधर्म समभाव।

द) प्रो० मिश्र के बालसाहित्य पर अन्य साहित्यकारों का प्रभाव।

ड़) परवर्ती पीढ़ी पर प्रो० मिश्र का प्रभाव।

विषयोपसंहार - प्रो० मिश्र के बालसाहित्य पर विविध दृष्टियों से मूल्यांकन –

साहित्य अकादमी का बालसाहित्य अकादमी पुरस्कार 2013 प्रो० मिश्र का हिन्दी बालसाहित्य।

ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

1. वाग्वधूटी- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रथम संस्करण- अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद -1987।

2. मृद्विका- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद -1985

3. श्रुतिम्भरा- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद द्वितीय संस्करण सितंबर 2004।

4. मधुपर्णी- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद 2000

5. कौमारम्- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र नयनाभिराम चित्र वीथी के साथ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नईदिल्ली द्वारा

प्रकाशित 2009 ई.

6. अभिराजगीता- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, श्रीभद्रङ्गरोदय शिक्षण ट्रस्ट, गोदरा द्वारा प्रकाशित २०११

7. अभिनवपञ्चतन्त्रम्- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद- 2009

8. कान्तारकथा- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद- 2009

9. इक्षुगन्धा- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद- 2010

10. नाट्यनवग्रहम्- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद- 2007

11. नाट्यपंचामृतम्- प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद- 1977

सहायक ग्रंथ

1. त्रिवेणी कवि अभिराज राजेंद्र मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डॉ राजेश कुमारी मिश्र 'राजश्री', वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद 2005

2. एकांकी और एकांकी, डॉक्टर सुरेंद्र यादव, तक्षशिला प्रकाशन- 2001

3. नाट्य शास्त्र का इतिहास डॉ० पारसनाथ द्विवेदी चौखंबा सुरभरती प्रकाशन, वाराणसी 2012

4. साहित्यकल्पतरू- अभिराज राजेंद्र मिश्र, डॉ राजेश कुमारी मिश्र 'राजश्री', वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, 2010 ई

5. आधुनिक संस्कृत काव्य परंपरा- केशव राय मुगलवार, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, साहित्य संस्थान, इलाहाबाद- 1982

7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी -1987

कोश ग्रन्थ

1. संस्कृत हिंदी कोश- वामनशिवराम आप्टे, ओरिएंटल बुक सेंटर, दिल्ली 1977।

2. अमरकोश- अमर सिंह् प्रणीत- संक्षिप्त महेश्वर टीका समेत, सागर प्रकाशन -2010

3. पारिजात कोश- पंडित ईश्वर चंद्र परिमल पब्लिकेशन 2004

काव्यशास्त्रीय ग्रंथ

1. अभिराजयशोभूषणम्- प्रो० अभिराज राजेंद्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद- 2006

2. काव्यप्रकाश (श्री मम्मटाचार्य विरचित) डॉ० श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भंडार शिक्षा साहित्य के मुद्रक एवं प्रकाशक 2014

3. भारतीय काव्यशास्त्र- डॉ हरिश्चंद्र वर्मा, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला 2013

4. काव्यादर्श- आचार्य दण्डी विरचित डॉ० राजेश कुमारी मिश्र, राजश्री वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद 2005

5. साहित्यदर्पण- श्री विश्वनाथ, साहित्य भंडार, सुभाष बाजार, मेरठ-2- 1974

Websites-

http://m.sahityakunj.net//entries/view

http://sanskritbhasi.blogpost.com/2018/11/blogpost

http://sampadanandamishra.medium.com

शोधपत्र-

1. बालसाहित्य का ऐतिहासिक परिदृश्य- डॉ० श्रीकांत मिश्र (Knowledgeable Research vol 1 No 4, November 20022।

2. बाल साहित्य की जादुई दुनिया- उषा शर्मा।

3. शिक्षा, बाल साहित्य और विज्ञान डॉ० कृष्ण कुमार मिश्र।